अध्याय : ग्यारह

रमाकांत द्विवेदी 'रमता'

रमाकांत द्विवेदी 'रमता' के जन्म 30 अक्टूबर, 1917 के भोजपुरी के महुलघाट (बड़हरा) में भइल रहे । उहाँ का बचपने से जुझारू आ स्वाभिमानी रहीं । शुरुआती शिक्षा-दीक्षा बालानंद संस्कृत विद्यालय परशुरामपुर से, मध्यमा के बाद देवघर विद्यापीठ से साहित्य भूषण के उपाधि प्राप्त कइले रहीं । जवानी का उमिर में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में साथे रहस । 1972 में नमक सत्याग्रह में धरा के जेल गइलन । फेरू 1941 आ 1943 में भी जेल में सजा कटले ।

आजादी का बादो देश पर सामंत, पूँजीपतियन आ नौकरशाहन के दबदबा से इहाँ का हृदय में विद्रोह के आगि धधक उठल । जे 'बेयालिस के साथी' 'क्रांतिपथ' विद्रोही आदि रचना में देखे के मिले ला। 'नक्सलबाड़ी की जय' 'बिगुल बजा नक्सलवाड़ी', 'पेरलजाई परजा', 'रउवा नेता भइलीं', 'दिल्ली वाली रनिया', 'कलक रनिया', बेगारी तोरी करब नाहीं रे कुचाली, कलउ के भूत, सुराज के सराध, अकाल आदि इनकर प्रसिद्ध कविता बा । इहाँ का भोजपुरी के एगो सिद्ध कवि रहीं । इहाँ के साहित्य के बदलाव के हथियार मानत रहीं । एही से उहाँ के जन संस्कृति मंच से जुड़ के एह दिशा में सजग होके काम कइलीं । 24 जनवरी, 2008 के इहाँ के मउवत हो गइल।

विषय-प्रवेश

'बेयालीस के साथी' शीर्षक कविता में आजादी के बाद सुराज के कल्पना के अनुरूप बदलाव ना अइला पर कवि क्रांति के दिनन के इयाद करत कह रहल बाड़न कि जवना आजादी खातिर क्रांतिकारी लोग आपन सुविधा छोड़ के दर-दर के ठोकर खइलन, डाँड़ में रसा लगा के जेल गइलन, रात-बिरात भागल चललन, जुल्मी अंग्रेजन के लाठी खइलन, ऊ सुराज ना आइल । क्रांतिकारी लोग ई सब यातना एहसे सहलन कि अंग्रेजी सल्तनत के जुल्म के चक्की में पिसाए वाला गरीब गुरबा सम्मान के जीवन बितइहन। बाकिर आजादी के लड़ाई के सहभागिए लोग सत्ता पवला के बाद अहंकारी आ विलासी होके गरीब जनता के भुला गइलन ।

कवि के दृष्टि में ई स्थिति निराशाजनक बा आ एह सत्ता के मद में आंहर भइले लोगन के अंतो नजदीके लउकता । एही भाव के मार्मिक रूप में अभिव्यक्त कहल गइल बा ।

बेयालिस के साथी

साथी, ऊ दिन परल इयाद, नयन भरि आइल, ए साथी !

गरजे-तड़के चमके-बरसे, घटा भयावन कारी
आपन हाथ आपु ना सूझे, अइसन रात अन्हारी
चारो ओर भइल पजंजल ऊ, भादो-भदवारी
डेगे-डेग गोड़ बिछिलाइल, फनलीं कठिन कियारी
केहि आशा वन-वन फिरलीं छिछिआइल, ए साथी !

हाथे कड़ी, पाँव में बेड़ी, डाँड़े रसी बन्हाइल
बिना कसूर मूंज के अइसन, लाठिन देह थुराइल
सूपो चालन कुरुक करा के जुरुमाना वसुलाइल
बड़ा धरछने आइल, बाकी ऊ सुराज ना आइल
जवना खातिर तेरहो करम पुराइल, ए साथी !

भूखे-पेट बिसूरे लइका, समुझे ना समुझावे
गाँधि लुगरिया रनिया झुरवे, लाजो देखि लजावे
बिनु किवाँड़ घर कूकुर पइसे, ले छुँछहँड़ ढिमिलावे
रात-रात भर सोच-फिकिर में आँखी नींन न आवे
ई दुख सहल न जाइ कि मन उबिआइल, ए साथी !
कूर-सँघाती राज हड़पले, भरि मुंह ना बतिआवसु

हमरे बल से कुरसी तूरसु, हमके आँख देखावसु
दिन-दिन एने बढ़े मुसीबत, ओने मउज उड़ावसु
पाथर बोझल नाव भवँर में, दइबे पार लगावसु
सजगे इन्हिको अंत काल नगिचाइल, एक साथी !

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बेयालिस के साथी' कविता के मूल भाव का बा ?

(क) प्रकृति वर्णन (ख) सामाजिकता

(ग) राष्ट्रीयता (घ) एह में कवनो ना

2. 'बेयालिस के साथी' कविता में कवना मौसम के वर्णन बा ?

(क) जाड़ा (ख) बरसात

(ग) गर्मी (घ) बसंत

3. 'बेयालिस के साथी' बिना कसूर कवना चीज अइसन लोग पिटाइल ?

(क) गदहा (ख) भूसा

(ग) मकई (घ) मूंज

4. रात-रात भर नींन काहे ना आवे ?

(क) हल्ला-गुल्ला से (ख) सोच-फिकिर से

(ग) गर्मी से (घ) डर से

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. कवना आशा में वन-वन छिछिआइल फिरत बा ?

6. आपन हाथ अपने काहे ना सूझे ?

7. जवना खातिर तेरहो करम पूरल ऊ का ह, जे ना आइल ?

8. कइसन आदमी राज हड़पले बा ?

9. जेकरा बल से कुरसी बइठल बा, ओकरा से का नइखे करत ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कवन-कवन दुख सहला का बादो सुराज ना आइल ?

2. 'पाथर बोझल नाव भवँर में' केकरा खातिर आइल बा ? एह पंक्ति का माध्यम से देश के वर्तमान स्थिति के दुर्दशा के चित्रण भइल बा-- कइसे ?

भाषा के संगे

नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ दिहल बा। एकर वाक्य प्रयोग करीं।

1. नयन भरल–दुःखी भइल
2. तेरहो करम पुराइल–सब गत भइल
3. कुरसी हरपले–राज कइल
4. आँखि देखावसु–डेरवावल

परियोजना कार्य

1. 'बेयालिस के क्रांति' से संबंधित कवनो आउरी कविता खोज के पढ़ी आ ओकर अर्थ लिखीं ।

2. अपना गाँव-जवार में बेयालिस के आंदोलन का बेरा सुराजी लोग द्वारा गावे वाला कवनो गीत इयाद क के लिखीं ।

शब्द-भंडार

पंजंजल	–	कादो-पानी
बिछिलाइल	–	फिसिलल
बेड़ी	–	जंजीर, पैर के बांधे वाला धातु के बनल जंजीर
मूंज	–	एक तरे के पौधा (झाड़ी) जवना से रसरी बनेला
कुरुक	–	जब्त कइल
जुरुमाना	–	दंड

बिसूरे	--	सुसुक-सुसुक के रोवल
लुगरिया	--	फाटल साड़ी
संघाती	--	साथी, इयार
वइबे	–	भगवाने
नगिचाइल	–	नियराइल

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA